॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ९ दिसम्बर २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ · अंक - ९, दिसम्बर, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जिनप्रतिमा का प्राचीन स्वरूप :	प्रो. सागरमल जैन	४२१
२.	नमस्कार—माहात्म्य	पण्डित काशीनाथ जैन	४२९
३.	वैर का विपाक		४३८
४.	संकलन	भूरचन्द जैन	४४७

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

जिनप्रतिमा का प्राचीन स्वरूप : एक समीक्षात्मक चिंतन

प्रो. सागरमल जैन

जिनभाषित मई २००३ के अंक में दिगम्बरों की 'जिन प्रतिमा की पहिचान के प्रमाण' नामक सम्पादकीय आलेख के साथ-साथ डॉ. नीरज जैन का लेख दिगम्बर जैन प्रतिमा का स्वरूपः स्पष्टीकरण तथा दिगम्बर प्रतिमा के स्वरूप के स्पष्टीकरण की समीक्षा के रूप में पण्डित मूलचंद जी लुहाड़िया के लेख देखने को मिले।

उक्त तीनों ही आलेखों के पढ़ने से ऐसा लगता है कि ऐतिहासिक सत्यों उनके साक्ष्यों को एक ओर रखकर केवल साम्प्रदायिक आग्रहों से ही हम तथ्यों को समझने का प्रयत्न करते हैं। यह तथ्य न केवल इन आलेखों से सिद्ध होता है अपितु उनमें जिन श्वेताम्बर आचार्यों और उनके ग्रन्थों के सन्दर्भ दिये गये है, उससे भी यही सिद्ध होता है। पुनः किसी प्राचीन स्थिति की पुष्टि या खण्डन के लिए जो प्रमाण दिये जाए उनके संबंध में यह स्पष्ट होना चाहिए कि समकालिक या निकट पश्चात्कालीन प्रमाण ही ठोस होते हैं। प्राचीन प्रमाणों की उपेक्षा कर परवर्ती कालीन प्रमाण देना या पुरातात्विक प्रमाणों की उपेक्षा कर परवर्ती साहित्यिक प्रमाणों को सत्य मान लेना सम्यक् प्रवृत्ति नहीं हैं। आदरणीय नीरज जी, लुहाड़िया जी एवं डॉ. रतनचंद्र जी जैन विद्या के गम्भीर विद्वान है। उनमें भी नीरज जी तो जैन पुरातत्व के तलस्पर्शी विद्वान है। उनके द्वारा प्राचीन प्रमाणों की उपेक्षा हो, ऐसा विश्वास भी नहीं होता। ये लेख निश्चय ही साम्प्रदायिक विवादों से उपजी उनकी चिंताओं को ही उजागर करते हैं। वस्तुतः वर्तमान में मंदिर एवं मूर्तियों के स्वामित्व के जो विवाद गहराते जा रहे है, वहीं इन लेखों का कारण हैं। किन्तु हम इनके कारण सत्य से मुख नहीं मोड़ सकते है। इन लेखों में जो प्रमाण प्रस्तुत किये गये है, उन्हें पूर्वकालीन स्थिति में कितना प्रमाणिक माना

जाये यह एक विचारणीय मुद्दा हैं। सबसे पहले उनकी प्रमाणिकता की ही समीक्षा करना आवश्यक है। यहाँ मैं जो भी चर्चा करना चाहूँगा वह विशुद्ध रूप से जैन संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से करना चाहूँगा। यहाँ मेरा किसी परम्परा विशेष को पुष्ट करने या खण्डित करने का कोई अभिप्राय नहीं है। मेरा मुख्य अभिप्राय केवल जिन प्रतिमा के स्वरूप के संदर्भ में ऐतिहासिक सत्यों को उजागर करना हैं।

अपने सम्पादकीय में प्रो. रतनचन्द्र जैन ने सर्वप्रथम विशेषांवश्यकभाष्य का निम्न संदर्भ प्रस्तुत किया है :-

जिनेन्द्रा अपि न सर्वथैवाचेलकाः

सव्वे वि एग दूसेणनिग्गया जिनवरा चउव्वीस

—इत्यादि वचनात् (विशेषावश्यक भाष्य वृत्ति सह गाथा—२५५१) जब साक्षात् तीर्थंकर देवदुष्य-वस्त्र युक्त होते है तो उनकी प्रतिमा भी देवदुष्य युक्त होना चाहिये।

प्रस्तुत संदर्भ वस्तुतः लगभग छठी शताब्दी का है। यह स्पष्ट है कि छठी शताब्दी में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा एक दूसरे से पृथक हो चुकी थी। प्रस्तुत गाथा और उसकी वृत्ति ही नहीं, यह सम्पूर्ण ग्रन्थ ही श्वेताम्बर मान्यताओं का सम्पोषक है, चाहे आचरांग का यह कथन सत्य हो कि, भगवान महावीर ने दीक्षित होते समय एक वस्त्र ग्रहण किया, किन्तु दूसरी ओर यह भी सत्य है कि उन्होंने तेरह माह के पश्चात् उस वस्त्र का परित्याग कर दिया था। उसके पश्चात् वे आजीवन अचेल ही रहे। किन्तु पार्श्व के संबंध में विशेषावश्यकभाष्य का यह कथन स्वयं उत्तराध्यन से ही खण्डित हो जाता है कि पार्श्व भी एक ही वस्त्र लेकर दीक्षित हुये थे। वस्त्र के संबंध में पार्श्व की परम्परा सन्तरोत्तर थी अर्थात् पार्श्व की परम्परा के मुनि एक अधोवस्त्र (अंतर-वासक) और एक उत्तरीय ऐसे दो वस्त्र धारण करते थे। यहाँ यह भी मानना बुद्धिगम्य नहीं लगता कि किसी भी तीर्थंकर की शिष्य परम्परा अपने गुरु से भिन्न आचार का पालन करती हो। अतः श्वेताम्बरों का यह कहना कि गौतम आदि महावीर की परम्परा के गणधर सवस्त्र थे- सत्य प्रतीत नहीं होता है, इसी प्रकार दिगम्बर परम्परा की यह मान्यता कि सारे तीर्थंकर एवं उनके शिष्य अचेल ही थे, विश्वसनीय नहीं लगता हैं। यह

बात भी सत्य हो सकती है कि चाहे भगवान महावीर ने मुनियों की निम्न श्रेणी के रूप में ऐलकों और क्षुल्लकों की व्यवस्था की हो और ऐलको को एक वस्त्र तथा क्षुल्लको को दो वस्त्र रखने की अनुमति दी है तथा इसी संबंध में 'सामायिकचारित्र' और 'छेदोपस्थापनीय' चारित्र (महाव्रतारोपण) ऐसी द्विविध चारित्र की व्यवस्थाएं दी हो। यह भी सम्भव है कि भगवान महावीर ने सवस्त्र मुनियों को मुनिसंघ में बराबरी का दर्जा नहीं दिया हो। यह बात स्वयं श्वेताम्बर परम्परा में प्रचलित 'सामायिकचारित्र' और 'छेदोपस्थापनीय चारित्र' की अवधारणा से भी सिद्ध होती हैं। श्वेताम्बरों में जिनकल्प और स्थविरकल्प की अवधारणा तथा दिगम्बर परम्परा में क्षुल्लक, ऐलक एवं अचेल मुनि के भेद यही सिद्ध करते हैं। यहाँ हम इस चर्चा में विशेष उतरना नहीं चाहते, केवल यह स्पष्ट करने का ही प्रयत्न करेंगे कि विशेषावश्यकभाष्य मूलतः श्वेताम्बर परम्परा के दृष्टिकोण का सम्पोषक है, उसके रचनाकाल तक अर्थात् छटी–सातवीं शती तक तीर्थंकरों की श्वेताम्बर मान्यता के अनुरूप मूर्तियाँ बनना प्रारम्भ हो गई थी। अकोटा की ऋषभदेव की प्रतिमा इसका प्रमाण हैं। अतः उसके कथनों को पूर्वकालीन स्थितियों के संदर्भ में प्रमाण नहीं माना जा सकता हैं। श्वेताम्बर परम्परा का यह कथन कि सभी तीर्थंकर एक देवदूष्य वस्त्र लेकर दीक्षित होते है और दिगम्बर परम्परा का यह कथन कि सभी तीर्थंकर अचेल होकर दीक्षित होते है–साम्प्रदायिक मान्यताओं के स्थिरीकरण के बाद के कथन हैं। ये प्राचीन स्थिति के परिचायक नहीं हैं। यह सत्य है कि महावीर अचेलता के ही पक्षधर थे, चाहे आचारंग के अनुसार उन्होंने एक वस्त्र लिया भी हो, किन्तु निश्चय तो यही किया था कि मैं इसका उपयोग नहीं करूँगा–जिसे श्वेताम्बर भी स्वीकार करते हैं। मात्र यही नहीं, श्वेताम्बर मान्यता यह भी स्वीकार करती है कि उन्होंने तेरह माह पश्चात् उस वस्त्र का भी त्याग कर दिया और फिर अचेल ही रहे। महावीर की अचेलता के कारण ही प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ अचेल ही बनी। पुनः चूंकि उस काल में बुद्ध की मूर्ति सचेल ही बनती थी, अतः परम्परा का भेद दिखाने के लिए भी तीर्थंकर प्रतिमाएँ अचेल ही बनती थी।

प्रो. रतनचंद्रजी ने दूसरा प्रमाण श्वेताम्बर मुनि कल्याणविजयजी के 'पट्टावलीपराग' से दिया, वस्तुतः मुनि कल्याणविजयजी का यह उल्लेख भी

श्वेताम्बर पक्ष की पुष्टि के संदर्भ में ही हैं। उनका यह कहना कि वस्त्र भी इतनी सूक्ष्य रेखाओं से दिखाया जाता था कि ध्यान से देखने से ही उसका पता लगता था, यह बात केवल अपने सम्प्रदाय की मान्यता को पुष्ट करने के लिये कही गई है। प्राचीन मूर्तियों में ही नहीं, वर्तमान श्वेताम्बर मूर्तियों में भी सूक्ष्म रेखा द्वारा उत्तरीय को दिखाने की कोई परम्परा नहीं है, मात्र कटिवस्त्र दिखाते हैं। यदि यह परम्परा होती तो वर्तमान में भी श्वेताम्बर मूर्तियों में वामस्कंध से वस्त्र को दिखाने की व्यवस्था प्रचलित रहती। वस्तुतः प्रतिमा पर वामस्कन्ध से वस्त्र दिखाने की परम्परा बौद्धों की रही है और ध्यानस्थ बुद्ध और जिन प्रतिमा में अन्तर इसी आधार पर देखा जाता हैं। अतः जिन प्रतिमा के स्वरूप के संबंध में मुनि कल्याणविजयजी का कथन भी प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार प्रो. रतनचंद्रजी ने 'प्रवचनपरीक्षा' का एक उद्धरण भी दिया है। उनका यह कथन कि जिनेन्द्र भगवान का गुह्यय प्रदेश शुभ प्रभामण्डल के द्वारा वस्त्र के समान ही आच्छादित रहता है और चर्मचक्षुओं के द्वारा दिखाई नहीं देता। वस्तुतः तीर्थकरों के संबंध में यह कल्पना अतिशय के रूप में ही की जाती हैं। लेकिन चाहे श्वेताम्बर परम्परा हो या दिगम्बर परम्परा, अतिशयों की यह कल्पना तीर्थंकर के संबंध में सत्य हो, मूर्ति के संबंध में सत्य नहीं। वैज्ञानिक सत्य यह है कि यदि मूर्ति नग्न है तो वह नग्न ही दिखाई देगी। किन्तु 'प्रवचनपरीक्षा' में उपाध्याय धर्मसागरजी का यह कथन कि गिरनार पर्वत के स्वामित्व के लेकर जो विवाद उठा उसके पूर्व पद्मासन की जिनप्रतिमाओं में न तो नग्नत्व का प्रदर्शन होता था और न वस्त्र चिन्ह बनाया जाता था समीचीन लगता हैं। अतः प्राचीन काल की श्वेताम्बर और दिगम्बर पद्मासन की प्रतिमाओं में भेद नहीं होता था। उनका यह कथन इस सत्य को तो प्रमाणित करता है कि पूर्व काल में जिन प्रतिमाओं में श्वेताम्बर और दिगम्बर का भेद नहीं होता था किन्तु हमें यह भी समझना होगा कि भेद तो तभी हो सकता था, जब दोनों सम्प्रदाय पूर्वकाल में अस्तित्व में होते।

मथुरा की मूर्तियों तथा एक हल्सी के अभिलेख से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि संघभेद के पश्चात् भी कुछ काल तक मंदिर व मूर्तियाँ

अलग-अलग नहीं होते थे। अभी तक उपलब्ध जो भी साक्ष्य है उनसे यही सिद्ध होता है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर प्रतिमाओं में स्वरूप भेद लगभग छठी शताब्दी से अस्तित्व में आया। आकोटा की धातु मूर्ति के पूर्व वस्त्र युक्त श्वेताम्बर मूर्तियों के कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है, यद्यपि छठी शताब्दी से श्वेताम्बर दिगम्बर मूर्तियाँ अलग-अलग होने लगी, किन्तु उस समय जो भी प्राचीन तीर्थ क्षेत्र थे उनमें जो प्राचीन मूर्तियाँ थी, वे यदि पद्मासन की मुद्रा में होती थी तो उनमें लिंग बनाने की परम्परा नहीं थी और यदि वे खड़गासन की मुद्रा में होती थी तो स्पष्ट रूप से उनमें लिंग बनाया जाता था। हाँ, यह अवश्य सत्य है कि परवर्ती काल के श्वेताम्बर आचार्य भी उन नग्न मूर्तियों का दर्शन, वंदन आदि करते थे।

प्रो. रतनचन्द्रजी ने बीसवी शताब्दी के स्थानकवासी आत्मारामजी और हस्तिमलजी के ग्रन्थों से भी उद्धरण प्रस्तुत किये, लेकिन ये उद्धरण भी प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं किये जा सकते, क्योंकि आचार्य आत्मारामजी एवं आचार्य हस्तीमल जी ने जो कुछ लिखा है वह अपनी अमूर्तिपूजक साम्प्रदायिक मान्यता की पुष्टि हेतु ही लिखा हैं। पुनः बीसवी शताब्दी के किसी आचार्य के द्वारा जो कुछ लिखा जाये वह पूर्व काल के संदर्भ में पूरी तरह प्रमाणित हो, यह आवश्यक नहीं होता हैं। जहाँ तक आचार्य हस्तिमल जी के उद्धरण का प्रश्न है, वे स्थानकवासी अमूर्तिपूजक परम्परा के आचार्य थे। उन्होंने जैन धर्म के मौलिक इतिहास में जो कुछ लिखा है वह अपनी परम्परा को पुष्ट करने की दृष्टि से ही लिखा है अतः निष्पक्ष इतिहास की दृष्टि से उनके कथन भी प्रमाण रूप से ग्राह्राय नहीं हो सकते हैं। **अब हम** जिनप्रतिमाओं के सम्बन्ध में प्राचीन स्थिति क्या थी, इसे भी कुछ पुरातात्विक अभिलेखीय साक्ष्यों से सिद्ध करेंगे।

कंकाली टीले से प्राप्त पुरातात्त्विक सामग्री और शिलालेखों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी से ही वहाँ जिनमूर्तियाँ निर्मित हुई है और वे प्रतिमाएँ आज भी उपलब्ध हैं। आचार्य हस्तिमलजी का यह कथन कि आचार्य नागार्जुन आदि यदि मूर्तिपूजा के पक्षधर होते तो उनके द्वारा प्रतिस्थापित मूर्तियां और मंदिरों के अवशेष कही न कही अवश्य उपलब्ध होते। किन्तु नागार्जुन के नाम का कोई मूर्तिलेख उपलब्ध न हो, तो

इससे यह निर्णय तो नहीं निकाला जा सकता है कि जैन संघ में इसके पूर्व मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं था। श्वेताम्बर आगम साहित्य में विशेष रूप से कल्पसूत्र- स्थविरावली में उल्लेखित गण, शाखा और कुलों के अनेक आचार्यों की प्रेरणा से स्थापित अभिलेख युक्त अनेक मूर्तियाँ मथुरा के कंकाली टीले से ही उपलब्ध हैं। आचार्य श्री हस्तिमलजी का कलिंगजिन को कलिंगजन पाठ मानना भी उचित नहीं हैं। पटना के लोहानीपुर क्षेत्र से मिली जिन प्रतिमा इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण है कि जैन परम्परा में महावीर के निर्वाण के लगभग १५० वर्ष पश्चात् ही जिन प्रतिमाओं का निर्माण प्रारम्भ हो गया था। साथ ही यह भी सत्य है कि ईसवी पूर्व तीसरी-चौथी शताब्दी से लेकर ईसा की छठी शताब्दी तक श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यताओं के अनुरूप अलग-अलग प्रतिमाओं का निर्माण नहीं होता था। श्वेताम्बर दिगम्बर परम्परा के वेद के बाद भी लगभग चार सौ साल का इतिहास यही सूचित करता है कि वे सब एक ही मंदिर में पूजा उपासना करते थे। हल्सी के अभिलेख से यह स्पष्ट हो ज़ाता है कि वहाँ श्वेतपट्ट महाश्रमण संघ, निग्रन्थ महाश्रमण संघ और यापनीय संघ तीनों ही उपस्थित थे, किन्तु उनके मंदिर और प्रतिमाएँ भिन्न भिन्न नहीं थे। राजा ने अपने दान में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख किया है कि इस ग्राम की आय का एक भाग जिनेन्द्रदेवता के लिए, एक भाग श्वेतपट्ट महाश्रमण संघ हेतु और एक बाग निर्ग्रन्थ महाश्रमण संघ के हेतु उपयोग किया जाए। यदि उनके मंदिर व मूर्ति भिन्न भिन्न होते, तो ऐसा उल्लेख सम्भव नहीं होता। भाई रतनचन्द जी का यह कथन सत्य है कि ईसा की छठी शताब्दी से पहले जितनी भी जिन प्रतिमा उपलब्ध हुई है, वे सब सर्वथा अचेल और नग्न हैं। उनका यह कथन भी सत्य है कि सवस्त्र जिन प्रतिमाओं का अंकन लगभग छठी-सातवीं शताब्दी से ही प्रारम्भ होता है। किन्तु इसके पूर्व की स्थिति क्या थी, इस संबंध में वे प्रायः चुप है यदि श्वेताम्बर परम्परा का अस्तित्व उसके पूर्व में भी था तो वे किन प्रतिमाओं की पूजा करते थे? या तो हम यह माने कि छठी-सातवीं शताब्दी तक श्वेताम्बर परम्परा का अस्तित्व ही नहीं था, किन्तु इस मान्यता के विरोध में भी अनेक पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक साक्ष्य जाते हैं। यह तो स्पष्ट है कि जैन संघ में भद्रबाहु और स्थूलिभद्र के

काल से मान्यता और आचार भेद प्रारम्भ हो गए थे और महावीर के संघ में क्रमशः वस्त्र–पात्र आदि का प्रचलन भी बढ़ रहा था। इस संबंध में मथुरा के कंकाली टीले के स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध हैं। कंकाली टीले के ईसवी पूर्व प्रथम सदी से लेकर ईसा की प्रथम द्वितीय सदी तक के जो पुरातात्त्विक साक्ष्य है, उनमें तीन बाते बहुत स्पष्ट है :–

१. जहाँ तक जिन मूर्तियों का संबंध है जो खड्गासन की जिन प्रतिमाएँ है उनमें स्पष्ट रूप से लिंग का प्रदर्शन है, पद्मासन की जो प्रतिमाएं है उनमें न तो लिंग का अंकन है न ही वस्त्र अंचल का अंकन। सामान्य दृष्टि से ये प्रतिमाएँ अचेल है।

२. किन्तु इन प्रतिमाओं के नीचे जो अभिलेख उपलब्ध है और उनमें जिन आचार्यों के नाम, कुल, शाखा एवं गण आदि के उल्लेख है वे सभी प्रायः श्वेताम्बर परम्परा द्वारा मान्य कल्पसूत्र की स्थविरावली के अनुरूप हैं। यह भी सत्य है कि कल्पसूत्र की स्थविरावली में वर्णित कुल, शाखा एवं गण को एवं उसमें वर्णित आचार को श्वेताम्बर अपनी पूर्व परम्परा ही मानते हैं। यह भी सत्य है कि दिगम्बर परम्परा उन कुल, शाखा, गण और आचार्यों को अपने से संबद्ध नहीं मानती है।

३. इसके अतिरिक्त जो विशेष महत्वपूर्ण तथ्य है वह यह है कि अनेक तीर्थंकर प्रतिमाओं की पादपीठ पर धर्मचक्र के अंकन के साथ-साथ चतुर्विध संघ का अंकन भी उपलब्ध है, उसमें साध्वी मूर्तियां तो सवस्त्र प्रदर्शित है किन्तु जहां तक मुनि मूर्तियों का प्रश्न है वे स्पष्ट रूप से नग्न हैं, किन्तु उनके हाथों में सम्पूर्ण कम्बल तथा मुख वस्त्रिका प्रदर्शित हैं। कुछ मुनिमूर्तियाँ ऐसी भी उपलब्ध होती है जिनके हाथों में पात्र प्रदर्शित है। एक मुनिमूर्ति इस रूप में भी उपलब्ध है कि वह नग्न है किन्तु उसके एक हाथ में प्रतिलेखन और दूसरे हाथ में श्वेताम्बर समाज में आज भी प्रचलित पात्र युक्त झोली है। इन मुनि मूर्तियों को सर्वथा अचेल परम्परा की भी नहीं माना जा सकता, वस्तुतः ये श्वेताम्बर परम्परा के विकास की पूर्व स्थिति की सूचक है तथा उसके

द्वारा प्रतिस्थापित, वंदनीय एवं पूज्यनीय रही है, ये मूर्तियां निश्चित रूप से अचेल हैं। पुनः यदि श्वेताम्बर उनके प्रतिष्ठापक आचार्यों को अपना मानते है तो उन्हें यह भी मानना होगा कि प्राचीन काल में श्वेताम्बर परम्परा में भी अचेल मूर्तियों की ही उपासना की परम्परा थी। श्वेताम्बर मूर्तियों के निर्माण की परम्परा यद्यपि परवर्ती है, किन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं है कि श्वेताम्बर धारा के पूर्व आचार्य एवं उपासक जिन मूर्तियों की उपासना नहीं करते थे। वस्तुतः वे अचेल मूर्तियों को ही पूजते थे।

आज जो श्वेताम्बर परम्परा में मूर्तियों को जिस प्रकार सवस्त्र रूप से अंकन करने की परम्परा है, वह एक निश्चित ही परवर्ती परम्परा है और लगभग छठी शती से अस्तित्व में आई है ताकि मूर्तियों को लेकर विवाद न हो, इसी कारण से यह अंतर किया गया हैं। दूसरे मूर्तियों को आभूषण आदि से सज्जित करने, कॉच अथवा रत्न आदि की ऑखे लगाने आदि की जो परम्परा आई है मूलतः सहवर्ती हिन्दू धर्म की भक्तिमार्गीय परम्परा का प्रभाव हैं।

आदरणीय श्री नीरजजी जैन, श्री मूलचंदजी लुहाड़िया और प्रो. रतनचंदजी जैन की चिंता के दो कारण है, प्रथम तो मूर्ति और मंदिरों को लेकर जो विवाद गहराते जाते है, उनसे कैसे बचा जाये और प्राचीन मंदिर और मूर्तियों को दिगम्बर परम्परा से ही सम्बद्ध कैसे सिद्ध किया जाये। उनकी चिंता यथार्थ है, किन्तु इस आधार पर इस ऐतिहासिक सत्य को नकार देना उचित नहीं होगा कि ईसा की पांचवी-छठी शती के पूर्व श्वेताम्बर परम्परा भी अचेल मूर्तियों की उपासना करती थी, क्योंकि मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त अभिलेख और चतुर्विध संघ के अंकन से युक्त अनेकों मूर्तियाँ इसके प्रबलतम साक्ष्य उपस्थित करती है, उन्हें नकारा नहीं जा सकता है।

नमस्कार–माहात्म्य

पण्डित काशीनाथ जैन

एषः पंच नमस्कारः, सर्व पाप प्रणाशकः।

मंगलानां च सर्वेषां, मुख्यं भवति मंगलं।।

अर्थात् यह पंच परमेष्टि का नमस्कार सब पापों का नाश करने वाला है और समस्त मंगलों में प्रधान (प्रथम) मंगल है।

इस नमस्कार की महिमा अपरम्पार है। जो धर्म निष्ट और सदाचारी साधु पंच नमस्कार का त्रिकाल ध्यान करता है, उसके लिये शत्रु भी मित्र रूप बन जाता है, विष भी अमृत रूप हो पड़ता है, आश्रय रहित बन भी वास गृह रूप बन जाता है, सभी ग्रह उसके अनुकूल बन जाते हैं, चोर भी यश बढ़ाने वाले बन जाते हैं, अपशकुनादि भी शुभ फल देने वाले हो जाते हैं और दूसरों द्वारा प्रयुक्त यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्रादिक भी उसका पराभव नहीं कर सकते। इसी प्रकार शाकिनी भी उसके लिये माता जैसी बन जाती है, सर्प भी कमल नाल सा हो जाता है, अग्नि भी शीतल बन जाती है, सिंह भी शृंगाल और हाथी भी मृग बन जाते हैं। राक्षस भी उसकी रक्षा करते हैं, भूत भी विभूति बढ़ाते हैं, प्रेत भी प्रीति करने लगते हैं और चेटक भी दास बन जाते हैं। युद्ध भी उसके लिये धन देने वाला बन जाता है, रोग भी भोग देने वाले बन जाते हैं, विपत्ति भी सम्पत्ति का कारण बन जाती है और सब प्रकार का दुःख भी उसके लिये सुख देनेवाला बन जाता है।

जिस प्रकार गरुड़ का गम्भीर स्वर सुनकर चन्दन के वृक्ष सर्पो से मुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार पंच नमस्कार का गंभीर स्वर सुनकर मनुष्य सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है। जो लोग अपने मन में नमस्कार का ही स्मरण किया करते हैं, वे जल, स्थल, श्मशान, पर्वत, दुर्ग तथा ऐसे ही अन्यान्य कष्टकारी स्थान में यदि कष्ट में भी पड़ जाते हैं, तो वह कष्ट भी अन्त में उनके लिये उत्सव रूप ही बन जाता है। पुण्यानुबन्धी पुण्य वाला

जो पुरुष विधि-पूर्वक परमेष्टि नमस्कार का ध्यान करता है, वह तिर्यञ्च किं वा नरक की गति को नहीं प्राप्त होता। नमस्कार के प्रभाव से चक्रवर्ती, वासुदेव, प्रति वासुदेव और बलराम आदि की सम्पदा और ऐश्वर्य भी सुलभ बन जाता है। इस मन्त्र का विधि पूर्वक प्रयोग करने से वह वशीकरण, उच्चाटन क्षोभन, स्तम्भन और मूर्छा आदि कार्यों में भी सिद्धि देने वाला बन जाता है। इस मन्त्र का विधि पूर्वक स्मरण करने से वह निमेष मात्र में ही पर विद्या का नाश करता है और क्षुद्र देवता जो रूपादिक का परावर्तन करते हैं, उनका भी नाश करता है। स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोक में किसी भी प्राणी के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का यदि कोई आश्चर्य जनक अतिशय दिखलायी या सुनायी दे तो समझना चाहिये कि वह नमस्कार मन्त्र की आराधना का ही प्रताप है। तिर्च्छा लोक के चन्द्रादिक ज्योतिषी, पाताल के चमरेन्द्रादिक देव, सौधर्मादिक देवलोक के इन्द्रादिक और उनसे ऊपर भी जो अहमिन्द्रादिक देवता हैं, उनकी समस्त समृद्धियाँ पंच परमेष्टि रूपी कल्पवृक्ष के अंकुर पल्लव, कलिका किंवा पुष्प के समान हैं। इस नमस्कार रूपी विशाल रथ पर जिन्होंने आरोहण किया है, उन्होंने बिना किसी विघ्न के मोक्ष पद प्राप्त किया है। जब यह मन्त्र अत्यन्त दुर्लभ मोक्ष सुख को भी दे सकता है, तब अन्यान्य सुख किंवा सुफलों के सम्बन्ध में तो कुछ कहना ही व्यर्थ है।

जो मनुष्य तन, मन और वचन की शुद्धि पूर्वक एक लाख नमस्कार का जप करता है, वह पूज्य तीर्थंकर का नाम कर्म उपार्जन करता है। जिसका मन नमस्कार में लीन नहीं होता, वह यदि दीर्घकाल तक तप, श्रुत या चारित्र का आचरण करता है, तो उससे भी कोई लाभ नहीं होता। नमस्कार से अगणित दुःखों का नाश होता है और वह कामधेनु की तरह इस लोक तथा परलोक के सुख प्रदान करता है। जो अन्धकार दीपक, सूर्य, चन्द्र किंवा किसी भी तेज से नष्ट नहीं होता, वह नमस्कार के तेज से नष्ट हो जाता है। आत्मकल्याण की इच्छा रखने वाले मनुष्य को कृष्ण और साम्ब आदि की तरह भाव नमस्कार कर आत्मा को व्यर्थ के कष्ट में न डालना चाहिये। जिस प्रकार पुण्य समूह का स्वामी भाव नमस्कार है। इस

जीव को भाव नमस्कार के बिना न जाने कितनी बार ग्रहण किया हुआ साधुवेश त्याग देना पड़ा है। यदि विधि पूर्वक नमस्कार मन्त्र का आठ बार, आठ सौ बार, आठ हजार बार, आठ लक्ष बार या आठ करोड़ बार जप किया जाता है, तो तीन जन्म के अन्दर ही वह मोक्ष पद प्रदान करता है। धर्मनिष्ट मनुष्य को इसके जप में आलस्य किंवा शिथिलता से काम न लेना चाहिये, क्योंकि संसार रूपी समुद्र पार उतारने के लिये यह नौका के समान है। भाव नमस्कार सर्वोत्तम तेज है, स्वर्ग और मोक्ष का द्वार है तथा दुर्गति का नाश करने में प्रलयकाल की अग्नि सदृश्य है।

यदि भव्य प्राणी अन्तकाल की आराधना के समय विशेष रूप से पाठ, जप किंवा श्रवण करता है, तो उसका कल्याण होने में देर नहीं लगती। जिस प्रकार घर में आग लगने पर बुद्धिमान मनुष्य समस्त वस्तुओं को छोड़कर केवल दरिद्र-नाशक महारत्न को ही ग्रहण करता है और जिस प्रकार वीर पुरुष अचानक विपत्ति आ पढ़ने पर छोटे मोटे सभी हथियारों को छोड़कर केवल अमोध अस्त्र को ही ग्रहण करता है, उसी प्रकार धीर-बुद्धि और देदीप्यमान शुभ लेश्यावाले सत्यवान जीव मृत्यु के समय पंच परमेष्टि नमस्कार का ही एकाग्र चित्त से ध्यान करते हैं, क्यों कि उस समय अन्यान्य शास्त्रों का ध्यान करना क़ठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव होता है। समुद्र से अमृत, मलयाचल से चन्दन, दही से मक्खन, और रोहणाचल से वज्ररत्न की भांति शास्त्रों से निकला हुआ यह पंचपरमेष्टि नमस्कार सभी शास्त्रों का सार और कल्याण का भण्डार है। धर्मनिष्ट, पुण्यात्मा और संसार में जो उत्तम पुरुष हैं, वे ही इसका सेवन करते हैं।

उत्सर्ग-विधि-शरीर से पवित्र होकर कमलासन से बैठ कर, हाथ से योगमुद्रा धारण कर संविज्ञ मनवाले भव्य प्राणी को शुद्ध, गम्भीर और मधुर स्वर से सम्पूर्ण पञ्च नमस्कार का उच्चारण करना चाहिये। यह उसकी उत्सर्ग विधि है।

अपवाद-विधि-किन्तु यदि शरीर अस्वस्थ हो और उत्सर्ग-विधि के अनुसार पञ्च नमस्कार का उच्चारण करना सम्भव न हो, तो पञ्च परमेष्टि के प्रथम अक्षर अ सि आ उ सा इस मन्त्र का ही स्मरण करना चाहिये। इन

पांच अक्षरों के स्मरण से भी अगणित प्राणियों ने यमराज के बन्धन से मुक्ति लाभ की है। यदि किसी अवस्था में इन पांच अक्षरों का भी स्मरण न किया जा सके, तो ओंकार मन्त्र का स्मरण करना चाहिये, क्योंकि यह भी पञ्च परमेष्टि का ही रूपान्तर किंवा संक्षिप्त रूप है। अर्हत, अरूपी (सिद्ध), आचार्य, उपाध्याय और मुनि, इनमें से प्रथम तीन के प्रथमाक्षर अ, अ और आ मिला कर संस्कृत सन्धि के अनुसार आ बनता है। आ में उपाध्याय का प्रथमाक्षर उ मिलाने से ओ बनता है। इसमें मुनि का मकार मिलाने से ओं किंवा ओम् होता है। इसीको जिनेश्वरों ने ओंकार मन्त्र कहा है। यह प्रणव बीज मुक्ति की इच्छा रखनेवाले प्राणियों के लिये मुक्ताफल समान, मोह रूपी हस्ती को वश करने में अंकुश समान और संसार के उपद्रवों का नाश करने में कटारी के समान है। यह स्वर्ग की कुञ्जी है। जो महात्मा इसका ध्यान करते हैं, वे जीवनकाल में सुख, और मृत्यु होने पर मोक्ष प्राप्त करते हैं। यदि कोई धर्मनिष्ट मनुष्य मृत्यु के समय ओंकार का स्मरण करने में भी असमर्थ हो, तो उसे किसी धर्म बन्धु के मुख से यह मन्त्र श्रवण करना चाहिये और उस समय अपने हृदय में निम्न लिखित बातें कहनी चाहिये—

अहो ! किसी पुण्यशाली बन्धु ने मुझे यह मन्त्र सुना कर मानो मुझ पर अमृत छिड़क दिया है। यदि ऐसा न होता तो मेरे अंग-प्रत्यंग पुलकित क्यों हो उठते? इस पवित्र, कल्याण कारी और मंगल रूप पञ्च परमेष्टि नमस्कार मन्त्र के श्रवण से मुझे दुर्लभ वस्तु का लाभ हुआ है। मुझे प्रिय और सारवस्तु मिल गयी, मुझे तत्व का प्रकाश मिल गया! आज मेरे सभी कष्ट दूर हो गये, मेरा पाप नष्ट हो गया और मैं संसार-सागर के दूसरे किनारे पर पहुँच गया। पञ्च नमस्कार मन्त्र के श्रवण से आज मेरा प्रशम रस, देव गुरू की आज्ञा का पालन, नियम, तप और जन्म-सभी कुछ सफल हो गया। जिस प्रकार अग्नि के ताप से सुवर्ण को तेज की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार यह मृत्यु की विपत्ति मेरे लिये लाभदायक हो पड़ी है, क्यों कि आज मुझे महा अमूल्य पञ्च परमेष्टिमय तेज प्राप्त हुआ है।

इस प्रकार पञ्च नमस्कार के स्मरण द्वारा अशुभ कर्मो का नाश कर बुद्धिमान पुरुष सद्गति को प्राप्त करता है। इस मन्त्र की भक्ति से मनुष्य

देवलोक में देवस्थ प्राप्त करता है और वहां से च्युत होने पर श्रेष्ठ कुल में पुनः मनुष्य के रूप में जन्म ग्रहण करता है। इसके बाद वह आठ जन्म के अन्दर ही सिद्ध पद को प्राप्त करता है।

सर्वकाल और सर्वक्षेत्र में निरन्तर नाम, आकृति (स्थापना) द्रव्य और भाव द्वारा तीनों लोक को पवित्र करने वाले जिनेश्वर हमारी शरण हों! यह जिनेश्वर भूतकाल में केवलज्ञानी आदि हुए थे, वर्तमान में ऋषभदेव आदि हुए हैं और भविष्य में पद्मनाभ आदि होने वाले हैं। सीमन्धर स्वामी आदि विहरमान तीर्थंकर हैं। चन्द्रानन, वारिषेण, वर्धमान और ऋषभ, यह चार शाश्वत तीर्थंकर हैं। जिनेश्वर (तीर्थंकर) वर्तमान में सर्व (५) महाविदेह, सर्व (५) भरत और सर्व (५) ऐरावत के मिलकर संख्याता और अतीत एवं अनागत काल को आश्रित कर अनन्ता होते हैं। यह सभी तीर्थंकर केवल ज्ञान के प्रकाश से देदीप्यमान होते हैं, अठारह पापस्थानों से रहित होते हैं और उनके चरण-कमलों को अनगिनत इन्द्र वन्दन करते हैं। उत्तम प्रतिहार्य (८) और (३४) अतिशय उनके आश्रित होते हैं, तीनों लोक के प्राणिंयों को सम्यक्त्व देनेवाला उनका धर्मोपदेश पैंतीस गुणों से अलंकृत होता है, अनुत्तर विमान में रहनेवाले देव हमेशा उनका स्मरण (ध्यान) करते हैं और वे उस मोक्ष मार्ग को देते हैं, जिसका देना दूसरों के लिये असंभव होता है। सम्यक् रूप से जिनेश्वर का दर्शन होने पर प्राणियों के पाप दूर हो जाते हैं, आधि (मानसिक कष्ट) व्याधि (शारीरिक कष्ट) नष्ट हो जाती है और दरिद्र से छुटकारा मिल जाता है। जो जीभ प्रतिक्षण जिनेन्द्र के माहात्म्य का गान न करती हो, उसे जीभ नहीं, बल्कि साधारण मांस खण्ड समझना चाहिये। जो कान अरिहन्त के मनोहर चरित्र का श्रवण न करते हों, उन्हें कान नहीं, बल्कि साधारण छिद्र समझना चाहिये। जो नेत्र समस्त अतिशयों से युक्त जिनेश्वर की प्रतिमा का दर्शन न करते हो, उन नेत्रों को नेत्र नहीं, बल्कि मुख रूपी मकान की खिड़कियाँ समझना चाहिये।

अरिहन्त की प्रतिमा का दर्शन करने से अनेक लोगों का अनेक प्रकार से कल्याण हुआ है। अनार्य देशवासी आद्रकुमार अरिहन्त-प्रतिमा के दर्शन से ही यह संसार-सागर पार करने में समर्थ हुए थे। शय्यंभव नामक ब्राह्मण को

जिन प्रतिमा के दर्शन से ही तत्वज्ञान प्राप्त हुआ था और उसने सद्गुरु की चरण सेवा कर स्वार्थ सिद्धि की थी। राजा वज्रकर्ण को कौन नहीं जानता, जिन्होंने राज्यादिक समस्त सम्पदा का नाश उपस्थित होने पर भी जिनेश्वर को छोड़कर दूसरे को नमस्कार करना स्वीकार न किया? वानरद्वीप का स्वामी बाली का चित्त अरिहन्त-प्रतिमा के दर्शन से ही देवतत्त्व और धर्मतत्व में निश्चल हुआ था। महासती सुलसा सद्धर्म में अत्यन्त दृढ़ थी, इसलिये जगद्गुरु महावीर स्वामी ने कुशलवार्ता में उसकी संभावना की थी (अर्थात् उसे सुख शाता और धर्म-लाभ कहलाया था)सेडुक नामक ब्राह्मण का जीव दर्दुर (मेढ़क) हुआ था। जब वह महावीर स्वामी को वन्दन करने जा रहा था, तब मार्ग में ही श्रेणिक राजा के अश्व के पैर नीचे दब कर उसकी मृत्यु हो गयी थी, परन्तु प्रभु-वन्दन का ध्यान होने के कारण वह सौ धर्म देवलोक में शक्र इन्द्र का सामानिक देव हुआ था। हासा और प्रहासा नामक देवियों का पति देव था। आभियोगिक कर्म करने के कारण उसे जब अत्यन्त खेद हुआ, तब उसने भी दुष्कर्म से मुक्त होने के लिये पृथ्वी पर देवाधिदेव की प्रतिमा स्थापित की थी। इसी प्रकार चेटक नामक राजा ने श्री जिनेश्वर के चरण कमलों की सेवा कर अपने समस्त पाप-ताप का नाश किया था, जिससे उसका प्रताप तीनों भुवन में फैल गया था और इन्द्र के हृदय में भी उसने अपना स्थान बना लिया था। देवेन्द्रों के सम्बन्ध में भी यह बात प्रसिद्ध है कि संसार-सागर को पार करने के लिये वे नंदीश्वर आदि तीर्थ के अलंकार रूप शाश्वता जिन चैत्यों में अट्ठाई उत्सव करते हैं। शास्त्रों में इसका भी उल्लेख है कि स्वयंभू रमण नामक अन्तिम समुद्र में जिन बिम्ब के आकार वाली मछली को देखकर अन्यान्य मछलियों को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है, वे समकित प्राप्त करती हैं और नवकार मन्त्र का ध्यानकर, मृत्यु होने पर वे स्वर्ग जाती हैं। मनुष्य, देव या असुर कुमार समय समय पर चक्रवर्ती होकर, जो सुख उपभोग करते हैं, उसे जिनेश्वर की चरण कृपा का ही प्रताप समझना चाहिये। मनुष्य लोक में चक्रवर्ती आदि राजा, स्वर्ग लोक में इन्द्रादिक देव और पाताल में धरणेन्द्र आदि भुवन पति के इन्द्र जिनेश्वर की भक्ति से ही ऐश्वर्य भोग करते हैं। जिनेश्वर की आज्ञा को मुकुट की भांति शिरोधार्य कर ग्यारह रूद्रों में से

कई इस संसार-सागर के उस पार पहुँच गये हैं और कई पहुँचने वाले हैं। जिस तरह अग्नि की ज्वाला जल में लीन हो जाती है और जिस तरह विष का प्रभाव अमृत में लीन हो जाता है, उसी तरह जिनेश्वर के समभाव में शंकर आदि देवताओं की कथा का विस्तार लीन हो जाता है। जो सत्पुरुष इन जिनेश्वरों के चरित्रों का मनन करते हैं, वे इस संसार में ही आनन्द मग्न रहते हैं और मोक्ष की भी इच्छा नहीं करते। जिस प्रकार जलसे, तृषा और अन्न से क्षुधा शान्त हो जाती है, उसी प्रकार जिनेश्वर के दर्शन मात्र से समस्त पीड़ाएँ शान्त हो जाती हैं। समता को धारण करने वाले महात्मा चाहे करोड़ों वर्ष तक सम्यक् प्रकार से समाधि का सेवन क्यों न करें, किन्तु जब तक वे अरिहन्त की आज्ञा पालन न करेंगे, तब तक मोक्ष न प्राप्त कर सकेंगे। जो जिन धर्म को स्वीकार नहीं करते, वे नियाणा रहित दान करने, निर्मल शील का पालन करने और उत्कृष्ट तपस्या करने पर भी मोक्ष के अधिकारी नहीं हो सकते। जिस प्रकार सूर्य से दिन होता है, चन्द्र से पूर्णिमा होती है और वृष्टि से सुभिक्ष होता है, उसी प्रकार जिनेश्वर के धर्म से अव्यय पद किंवा मोक्ष प्राप्त होता है। जिस प्रकार धृत का आधार पासे पर है, खेती का आधार वृष्टि पर है। उसी प्रकार मोक्ष का आधार जिनेश्वर के ध्यान पर है। तीनों लोक की लक्ष्मी को प्राप्त करना सुलभ है, अणिमादिक अष्ट सिद्धियों को प्राप्त करना भी सुलभ है, किन्तु जिनेश्वर के चरण-कमल की रज को प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है। यह कितने दुःख की बात है कि सूर्य के प्रकाश में भी जिस प्रकार उल्लू अन्धा ही बना रहता है, उसी प्रकार जिनेश्वर को प्राप्त करने पर भी अनेक मनुष्य अत्यंत मिथ्या दृष्टिवाले ही बने रहते हैं। महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, परमात्मा, सुगत (बुद्ध) अलक्ष्य, स्वर्ग, मृत्यु और पाताल के स्वामी सर्व जिनेश्वर ही हैं। बुद्ध और महादेव आदि लौकिक देवताओं का ज्ञान सत्य, रज और तप, इन तीन गुणों के विषयों से युक्त होता है, परन्तु जो ज्ञान लोकोत्तर सत्य से उत्पन्न होता है, वह सर्व जिनेश्वरों में ही पाया जाता है। जिनेश्वर परमात्मा से यम नियमादि विविध गुणों को लेकर अनेक पण्डितों ने अपने-अपने हरिहर आदिक देवताओं में आरोपित किये हैं, इसलिये वे गुण उन देवताओं के नाम से भी प्रसिद्ध हैं जिस प्रकार मेघ का जल तालाब में पड़ने पर लोग उसे मेघ

का जल न कहकर तालाब का जल कहने लगते हैं, उसी प्रकार अरिहन्त के वचनों को अज्ञानी लोग हरि हर आदि देवताओं के वचन समझने लगते हैं। इसके अतिरिक्त लोकोत्तर सत्य का प्रचार जिन जिन नामों से हो, उन नामों को अरिहन्त के ही नाम समझना चाहिये। सत, रज और तम के आभास से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मादिक नामों से इस संसार सागर में भटकने वाले न जाने कितने जीव कितनी बार सम्बोधित किये जाते हैं। अपने देव विष्णु के हजार नाम सुनकर मूढ़ मनुष्य ही प्रसन्न होते हैं, ज्ञानी मनुष्य नहीं। श्रृंगाल को बेर मिल जाने पर वह उस के लिये महोत्सव का कारण बन सकता है, दूसरो के लिये नहीं। सिद्ध के अनन्त गुण होने के कारण जिनेश्वर के नाम भी अनन्त हैं अथवा यो कहिये कि निर्गुण होने के कारण उनका एक भी नाम नहीं हैं। ऐसी अवस्था में उनके नामों की संख्या कौन बतला सकता है? सत्तोगुण, रजोगुण और तमोगुण से रहित परमेष्टि के प्रभाव से ही यह संसार अज्ञान रूपी पंक में डूबने से बचा हुआ है। श्री अरिहन्त ने जिस समय मोक्ष प्राप्त किया, उस समय पाप से संसार की रक्षा करने के लिये, वे परम प्रिय पुण्य को मालूम होता है कि यहीं छोड़ गये थे और पाप उनके भय से जंगल में जा छिपा था। इस प्रकार भगवान जिनेश्वर पाप पुण्य रहित होकर मोक्ष का आनन्द ले रहे हैं। आत्मकल्याण की इच्छा रखने वाले लोगों को चाहिये कि वे जिनेश्वर दाता हैं, जिनेश्वर भोक्ता हैं, यह सर्व जगत जिन रूप है, सर्वत्र जिन की ही जय होती है और जो जिन हैं, वही यह है—इस प्रकार के ध्यान में लीन होकर इस लोक और परलोक के समस्त सुखों के अधिकारी बनें।

जो अरिहन्तों के लिये भी माननीय हैं और जिनके आठों कर्म क्षीण हो चुके हैं, ऐसे पन्द्रह प्रकार के सिद्धों का कौन सत्पुरुष स्मरण न करेगा? कर्म लेप रहित चिदानन्द रूप, रूपादिक रहित, स्वभाव से ही लोकाग्र भाग को प्राप्त, अनन्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा वीर्य से युक्त, सादि अनन्त स्थिति और एकतीस गुणों वाले परमेश्वर रूप और परमात्म-स्वरूप सिद्ध भगवान निरन्तर हमारी शरण हों। छत्तीस गुणों से सुशोभित गणधर (आचार्य) हमारी शरण हों। समस्त सूत्रों की शिक्षा देनेवाले उपाध्याय हमारी शरण हों। शान्ति आदिक दस प्रकार के धर्म में लीन, सदा सामयिक के स्थिर,

ज्ञानादिक तीन रत्नों को धारण करनेवाले और अत्यन्त धैर्य वाले साधु हमारी शरण हों। जिस प्रकार उत्पत्ति, सदा स्थिति और प्रलय को करनेवाले ब्रह्मा, विष्णु और महेश में तत्वतः कोई भेद नहीं हैं, उसी प्रकार आचार्य उपाध्याय और साधु में भी तत्वतः कोई भेद नहीं है। इन तीनों का मुनि में ही समावेश हो जाता है। केवृली भाषित धर्म, जो चराचर जगत के लिये आधार रूप कहा गया है, हमारे लिये उत्कृष्ट शरण हों। धर्म रूपी हिमालय पर्वत ज्ञान, दर्शन और चारित्र इन तीन रत्न रूप त्रिपथगा (गंगा) के तरंगों से तीनों भुवन को पवित्र करने वाला है। विविध प्रकार के दृष्टान्त और हेतु की उक्ति (वचन) सम्बन्धी विचार से समूहवाले और एकान्तवाद की स्थिति की खंडन करनेवाले स्याद्वाद के तत्व में हम लीन हो चुके हैं। सर्वज्ञ के समागम में नव तत्त्व रूपी अमृत का कुण्ड अवस्थित है। वह गम्भीरता का स्थान है, इसलिये वह सिद्धान्त मुझे पाताल के समान गम्भीर प्रतीत होता है। जिनागम समस्त ज्योतिषियों को मान्य है, मध्यस्थता का आश्रय करनेवाला है, रत्नाकर से घिरा हुआ है और अनन्त दर्शन से युक्त है। विकस्वर शाश्वत ज्योतिरूप परमेष्टि की वाणी ऐसी है, कि जो अच्छे मनवाले लोगों के हृदय में स्थान बना लेती है और दोनों लोक में सुख पहुँचाती है। श्री जिनेन्द्र की वाणी, जो श्री धर्म रूपी राजा की राजधानी रूप, दुष्कर्म रूपी कमलों को जला देने में हिम रूप और सन्देह समूह रूपी लता को छेदने में कुल्हाड़ी रूप है, हमारे कल्याण की वृद्धि करें। इस तरह के ध्यान रूपी समूह में जिसका अन्तरात्मा लीन हो जाता है, उसकी कर्मग्रन्थि मिट्टी के कच्चे घड़े की भांति बिलय हो जाती है। श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, वुद्धि और लक्ष्मी की लीला को प्रकाशित करनेवाले और चक्रवर्तीत्व, स्वर्ग तथा मोक्ष को देने वाले नमस्कार मन्त्र की सदा जय हो।

सरस्वती नदी के तट पर अवस्थित श्री सिद्धपुर पाटन में सिद्धसेन सूरि की वाणी द्वारा यह श्री सिद्धचक्र का माहात्म्य गाया गया है।

समाप्त

वैर का विपाक

पुनरावृत्ति

कुछ ही समय बाद गुणसेन ने कुलपति को सम्बोधन करते हुए कहा:

एक बार तापसो के समुदाय की चरणरज मेरे महल में पड़े ऐसी मेरी भावना है। आप भिक्षा के लिये राजनगरी में- हमारे महल में क्यों नहीं पधारते?

राज्य का यदि आश्रय हमें मिलता हो तो क्या वही पर्याप्त नहीं है? भिक्षा के लिये तो हम चाहे जहां जा सकते है। राजा का महल हो या गरीब की झोपड़ी हमारे सामने तो दोनों ही समान हैं। एक मात्र अग्निशर्मा के विषय में तो मैं कुछ नहीं कह सकता हूँ।

अग्निशर्मा का तप अपवाद रूप है। उनके भिक्षा के नियम भी अपवाद रूप हैं। 'मैं मात्र एक ही घर में भिक्षा के लिये जाता हूँ। किसके यहां जाऊं यह पहले से निश्चित भी नहीं करता हूं। वहां से भिक्षान्न मिल जाये तो ठीक। नहीं तो दूसरे महीने का उपवास मैं आरम्भ कर देता हूँ। मेरे मन में राजा-रंक का कोई भेद नहीं है।'

महीने में अभी पांच दिन शेष थे। पच्चीस-पच्चीस दिन के उपवास खींचते हुए भी अग्निशर्मा को अपने पारने के लिये मानों किसी भी प्रकार का रस नहीं था। कब उपवास की अवधि समाप्त हो और आहार प्राप्त हो ऐसी कोई आतुरता उनके शब्दों में नहीं देखी जाती है।

गुणसेन ने कहा : इस बार तो आपने मेरे राज महल में ही पधारे और भिक्षा सामग्री स्वीकारे यही मेरी नम्र विनती है।

अग्निशर्मा को इसका कोई भी विरोध नहीं था। महाराज के पुत्र जैसा ही उनका जामाता जहां इस प्रकार आग्रह पूर्वक विनती करे वहां उसका अनादर भी कैसे हो? फिर भी अग्निशर्मा ने कहा: दो घड़ी पश्चात् क्या होगा यह कोई भी नहीं जानता है। पाँच पाँच दिन पहले से वचन देना हमारे आचार के अनुकूल नहीं परन्तु तुम्हारी प्रार्थना का मैं अवश्य ही ध्यान रखूंगा।

राजकुमार की विनती, तापस की मर्यादा को शोभे उस प्रकार स्वीकार करने की रीति के लिये आचार्य कौडिन्य ने भी अग्निशर्मा की मन ही मन में प्रशंसा की। शर्मा मात्र सूखे तपस्वी ही नहीं थे। अपनी मर्यादाओं के संबंध में भी जागृत और सावधान थे यह देख आचार्य को गहरा संतोष हुआ।

गुणसेन भी आश्रम को देखकर अपने महल को लौट गया। प्रातःकाल में जो गुणसेन था वह अब सायंकाल में बदल गया था।

पच्चीस-पच्चीस दिनों की भूख के सामने झूझते तपस्वी के अंतिम पाँच दिन भी बीत गये। इस पांच दिनों की प्रत्येक पल कितनी विषम और विकट होगी?

भोगोपभोग और ऐश्वर्य के बीच में सुख से रहनेवाले संसारियों को अग्निशर्मा के मासोपवास के इन अंतिम दिनों की कठिन कठोर कसौटी कदाचित नहीं समझ में आये। लंबे उपवास आरंभ के और अंत के दिन तपस्वी के संयम-सागर में बड़े तूफान की सर्जना करते हैं। एक पल की भी भूख अथवा तृष्णा जिनसे सहन नहीं हो सकती है वे आहार और इंद्रियों के विषयों की परितृप्ति सिवा जिनका दूसरा कोई ध्येय नहीं है उन्हें अग्निशर्मा की उग्र तपश्चर्या आत्मघात का ही एक प्रकार दीखता होगा।

जो भी हो, परन्तु पांच दिन पूरे होते ही तपस्वी अग्निशर्मा आहार की खोज में, वसंतपुर के राजमार्ग पर चल निकले। शरीर को जिन्होंने मात्र साधनरूप माना हो, दमन की मट्टी में आत्मकल्याण के सोने को शुद्धतर-शुद्धतम बंनाने की ही जिनकी दृष्टि हो वे स्वादिष्ट भोजन की क्यों परवाह करें? अग्निशर्मा मात्र देह की निर्वाह के लिये ही आहार की खोज में निकले थे।

ऊपराऊपरी उपवासों ने अग्निशर्मा की देह को शुष्क और जीर्ण बना दिया था। सामान्य राहगीरों को तो वह मूर्तितंतक्षुधारूप ही लगता था। परन्तु अन्न नहीं मिलने से भूखे रहनेवालों और भूख के दुःख के विरूद्ध सिंहवृत्ति से चिनौती देनेवालों में बड़ी मांटी अंतर है कि जो अग्निशर्मा की आंखों में से निकलती संयमभरी तेजस्विता देखनेवाला ही समझ सकता है। अग्निशर्मा भूख बरदाश्त करता था, परन्तु उसने भूख की व्यथा को मानो पचा ही लिया

था। अन्न प्राण माना जाता है परन्तु इस प्राण की भी परवाह नहीं करने वाला अग्निशर्मा मात्र हाड़ और चाम की जीर्ण आकृति जैसा नहीं लगता था। इन्द्रियों की उद्दाम विकृति पर विजय वतानेवाले किसी एक विश्वविजेता की भांति बसंतपुर की आलीशान इमारतों को पीछे छोड़ता हुए आगे ही आगे जा रहा था।

जो तपस्वी को कुछ भी समझते पहचानते थे वे आश्चर्य चकित हो अपने आप से ही पूछ रहे थे : सदा इतनी ही सीमा में से भिक्षा लेकर पीछे लौट जानेवाले तपस्वी आज धुन ही धुन में इतने दूर कहां जा रहे हैं?

एक दो जनों ने तो साहस कर तपस्वी को दोनों हाथ जोड़ अपने यहां भिक्षा के लिए पधारने का आग्रह भी कर देखा। प्रत्युत्तर में तपस्वी का मृदु हास्य का पुरस्कार ही उन्हें प्राप्त हुआ था।

कुछ दूर जाने पर ही राजमहल दिखाई दिया। इसी समय तपस्वी के कान में कोई गुप्त मंत्र फूंकता हो ऐसा उन्हें भान हुआ। दूसरा कोई भी नहीं सुन पाए इस प्रकार वह कह रहा था। कि

हे तपस्वी! इस प्रकार कहां राजमहल के भोग-ऐश्वर्य में भागीदार बनने को जा रहे हो? तपस्वी को राजमहल के भोगोपभोग में भाग बंटाना क्या शोभा देता है? क्या तुमने अपना अंतर परीक्षा करके देख लिया है? राजमहल तो प्रलोभनों लोभ-लालचों का मायामंदिर माना जाता है। राजा का सत्कार, राजा का आतिथ्य तो कच्चा पारा है। पचाया जा सके तो खुशी से जाओ। नहीं तो इस तलवार की धार पर चलने से दूर ही रहो।

कौन बोल रहा है इसकी खोज करने को तपस्वी ने चारों ओर देखा। परन्तु निर्जन जैसे लगते उस राजमार्ग में कोई भी उनके पास खड़ा हो ऐसा उन्हें नहीं लगा।

ऐसा मान कर कि ऐसे ही कोई भ्रान्ति हुई होगी। तपस्वी आगे बढ़ गए । गुणसेन अभी दौड़ा हुआ आएगा। जिस गुणसेन ने एक दिन मेरी निष्ठुरता से हंसी-मजाक की थी वही गुणसेन पश्चात्ताप से अपने पापों को धो डालता और दौड़ता आकर दो हाथ जोड़कर सामने खड़ा रहेगा। चाहे जो हो फिर भी गुणसेन विनम्र है। उसे अपने दोष समझ में आए होंगे। इसीलिए

इतने आग्रह पूर्वक वह मुझे आंमत्रित कर गया था। नहीं तो मुझे और इस राजमहल का लेना देना ही क्या हो सकता है?

महल में इस समय दौड़धूप मची हुई थी। वैद्य और मंत्र-तंत्रवादी एक के बाद एक आते और जाते देखे जाते थे।

तपस्वी ने द्वारपाल के पास पहुंचकर गुणसेन को अपने आगमन की सूचना पहुंचाने को कहा। द्वारपाल इन अग्निशर्मा को पहचानता नहीं था। और इसीलिये उसने उन्हें भी हजारों याचक और प्रार्थी आने जानेवालों में ही एक समझ लिया। फिर भी वह विवेकपूर्वक उनसे बोला :

महाराज! किंचित् खड़े रहिये। कुमार भीतरी खंड में हैं। कोई दासी आ जाए तो मैं उसके साथ आपके पधारने की सूचना पहुंचवा दूंगा।

तपस्वी मार्ग के एक ओर पाषाण की प्रतिमा की भांति ही भूमि पर दृष्टि टिकाए खड़े रहे। कुछ देर तक को किसी ने इनकी कोई भी खबर नहीं ली। महीने के उपवास की समाप्ति पर तपस्वी भिक्षा के लिये वहां आए हैं, ऐसा किसी को भी खयाल नहीं आया। और कदाचित् ऐसा खयाल किसी को आया भी हो तो उपवास भी इनका एक धंधा ही होगा, अतः उसमें सिर खपाने की अथवा उनके इस धंधे में बीचबचाव करने की किसी भी राजकर्मचारी को आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई।

इतने ही में सद्भाग्य से उधर से एक दासी जाती हुई दीख पड़ी। द्वारपाल ने उससे कहा कि कुमार महाराज को तुम यह सूचना कर देना कि कोई एक तपस्वी द्वार पर खड़े हैं। आपकी आज्ञा मांग रहे हैं।

दासी सुनी-अनसुनी करती भीतर दौड़ गई। उसे तपस्वी की कुछ भी चिंता नहीं थी। वैसे तो हजारों ही कंगाल आते जाते थे। यह तो राजमहल है। यदि हर किसी की सम्हाल लेने को इस प्रकार रूका जाए तो फिर दासियों को अपने काम करने का ही अवकाश प्राप्त न हो।

इधर तपस्वी को भी बिलम्ब होने की ऐसी कोई चिंता नहीं थी। शीघ्र अथवा देर से भी हो उनके आगमन का संवाद गुणसेन कुमार को मिल जाना चाहिए बस इतना ही वे चाहते थे। समाचार मिल जाने पर तो वह स्वयं दौड़ कर आएगा और उनका स्वागत करेगा इस विषय में उन्हें किंचिमात्र शंका नहीं थी।

पर्याप्त समय भी हो चला था। परन्तु गुणसेन को अपने आगमन के समाचार पहुंचे या नहीं इसका चिन्ह कुछ भी दिखलाई नहीं दिया। गुणसेन की विनती को स्वीकार करने में उन्होंने साहस किया था–आगे होकर ही आशा की अंगुली से निराशा को न्यौता था। इस प्रकार की खिन्नता तपस्वी के अंतर को तब दग्ध कर ही गई।

उन्हें पहले का गुणसेन भी स्मरण हो आया। भरी सभा में जो उनको सताता, नचाता और अनेक रीति से विडंबित करता था वहीं तो यह गुणसेन है। कत्थे की डोरी जल जाए फिर भी उसका बल बना ही रहता है। वैसे ही गुणसेन राजकाज में चाहे कुशल हो गया हो, दूसरों के साथ के व्यवहार में भी वह सुदक्ष माना जाता है, परन्तु कुतूहल करने का उसका पुराना स्वभाव नहीं गया है यह बहुत ही संभव है।

एक घड़ी तक इस प्रकार खड़ा रखने अथवा तो बिलंब करने के पश्चात् आकर आमंत्रित करने का ही उसने मन में निश्चय किया हो ऐसा भी संभव है। अन्न-भोजन की सामग्री की तो राजमहल में कोई कमी हो ही नहीं सकती है। आश्रम में आकर जब उसने आमंत्रण दिया था तब उसमें कौतुक करने की कोई वृत्ति थी ऐसा उन्हें जरा भी नहीं लगा।

तपस्वी को फिर भी कुछ आशा बंधी। गुणसेन आना ही चाहिए। सारे कामों को छोड़ कर अपने पुराने साथी को मिलने को वह अवश्य ही आएगा ऐसा उनका मन कह रहा था।

यह साक्षी सत्य था अथवा मायावी इसका निर्णय अभी कौन करता? चले जाना अथवा खड़े रहना इसी उधेड़बुन में तपस्वी थे कि उन्हें पहचानती हो ऐसी एक परिचारिका उधर से निकली। उसने दोनों हाथ जोड़कर तपस्वी को नमस्कार किया। तपस्वी आहार के लिये पधारे हैं यह जान वह शीघ्रातिशीघ्र गुणसेन महाराज के खंड की ओर दौड़कर पहुंची। परन्तु विशाल खंड़ में पहुंचते ही वैद्य के इस अभिप्राय के उद्गार उसके कानों को सुन पड़े। कुमार को अब कोई भी मत जगाना। रात्री में इन्हें नींद नहीं आई इस लिये इन्हें कठोर शिरवेदना हो गई है। किंचित् आराम मिट जायेगा कि ये स्वस्थ हो जायेंगे। चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

परिचारिका ने इधर ये शब्द सुने और उधर कुंमार पसवाड़ा फेर कर सो गए। निश्चय ही आज प्रातःकाल से ही वे घोर सिरपीड़ा से बेचैन थे और इसीलिये उनने किसी के साथ पूरी बात भी नहीं की थी। वैद्य और मंत्रवादी आकर उपचार करते और बताते रहे थे, परन्तु शूल का बढ़ता वेग कोई रोक नहीं सका था। अन्त में राजवैद्य ने उन्हें आराम कराने की व्यवस्था की। परिचारिका तपस्वी के संबंध में कहने जा रही थी पर उसके शब्द तो मुख के मुख में ही रह गए। उसे ऐसा लगा कि थोड़ा सा साहस कर तपस्वी के आगमन की बात कह देने से अवश्य ही थोड़ी अप्रसन्नता उसे सहनी पड़ेगी, परन्तु महीने महीने के उपवास खींचते तपस्वी के जीवन की रक्षा तो हो सकेगी। फिर भी अपने इस निश्चय को वह कार्य परिणत नहीं कर सकी।

इसी दासी ने फिर धीरे धीरे आकर तपस्वी को खिन्न स्वर में निवेदन किया कि गुणसेन महाराज को इस समय कोई भी मिल नहीं सकता है। उन्हें इस समय घोर शिरशूल हुआ है।

अधिक सुनने अथवा चर्चा करने की अब तपस्वी को आवश्यकता नहीं थी। जिस उत्साह से वे नगर में आए थे, उतने ही विषाद परिपूर्ण हृदय से वे अपने आश्रम को लौट गए।

आश्रम में भारी धरतीकंप हो गया होता, और हजारों आमवृक्ष उखड़ पड़े होते एवं घास की झोपड़ियां औंधी पड़ गई होती तो भी आश्रमवासियों को इतना भारी आघात अथवा आश्चर्य नहीं होता जितना कि उन्हें यह सुनकर हुआ कि अग्निशर्मा जैसे तपस्वी पुरुष राजमहल के आंगण से भिक्षाविहीन लौटे हैं और उनके भाग्य में एक महीने का फिर लंबा उपवास लिखा जा चुका है। सब के मुंह पर कालिमा छा गई थी। जिस शर्मा के चरण की रज घर-आंगण में पड़ते ही दीन-दरिद्र गृहस्थ के हृदय में भी अपना सर्वस्व अर्पण कर देने की अभिलाषा जाग जाए और स्वयं भूखा रहकर भी जो शर्मा को संतोष के लिये अपना आहार उनकी झोली में डालने को उत्सुक रहे वही अग्निशर्मा आमन्त्रित अतिथि होने पर भी बड़े राजमहल में से बिना भिक्षा के लौट आए इसमें उन्हें जगत पर किसी महा विकराल ग्रह अथवा नक्षत्र का अशुभ प्रभाव पड़ता दीखा। राजा का अन्न भंडार चाहे खूट नहीं गया हो फिर भी जिस राज्य

में महातपस्वी को पेट भरने जितनी भी भिक्षा नहीं मिले, वह अकेले तपस्वी का ही नहीं राज्य अथवा राज्य के स्वामी का ही नहीं अपितु समस्त भूमिवासियों का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए। किसी तपस्वी के आकस्मिक अवसान से भी आश्रमवासियों को इतना आघात नहीं होता जितना कि महीने के उपवास के अंत में पारण करने जितनी भिक्षा नहीं प्राप्त हो और तुरत ही दूसरे महीने का उपवास आदर लेना पड़े यह कल्पना ही उन्हें कपकपी छुड़ा रही थी।

अग्निशर्मा आश्रम में पहुंचे उस समय जिसने भी उनकी तप्त ताम्र मुद्रा देखा, उन्हें ऐसा लगा कि अब तपस्वी अपनी शान्ति और धीरता की मर्यादाओं को कदाचित तोड़ फोड़कर फैंक देंगे। कदाचित् वे शाप तक दे दें ऐसा तो घोर तपस्वी कीकेटि में रखा जा सके। वे यदि क्रोधायमान हो जाये तो सात सागरों का पानी भी उस दावानल को बुझा नहीं सकेगा।

आमंत्रण देकर घर के आंगन तक बुलानेवाले और वहां से उपवासी को पीछे धकेल देनेवाले गुणसेन के प्रति दूसरों को तो ठीक परन्तु स्वयं अग्निशर्मा को ही कैसी जलन लगी होगी? यही गुणसेन एकदा अग्निशर्मा को सताने में आनन्द मानता था। आज जब अग्नि शर्मा तपस्वी का नाम पा चुके हैं तब भी उन्हें सताने की उसने यह युक्ति क्या अंगीकार की होगी?

गुणसेन के प्रति बहते हुए क्रोध-आक्रोश के प्रवाह को पीछा लौटाने का–अवगणना की कड़वी घूंट को पी जाने का अग्निशर्मा ने प्रयत्न तो बहुत ही किया। परन्तु भूख की कठोर व्यथा को जिसे कुछ भी अनुभव है वह समझ सकता है कि इसमें अग्निशर्मा को जितना चाहिये उनती सफलता यदि नहीं मिली हो तो उसमें उनका दोष नहीं था।

वस्तुतः गुणसेन की नीच-कौतुकी प्रवृत्ति अभी तक भी नहीं मिटी हो ऐसे ही विचारों की उधेड़बुन में तपस्वी बैठे हुए थे, उनके आसपास सर्वत्र ग्लानि का वातावरण छाया हुआ था। इतने में तो गुणसेन की सवारी दूर से आती हुई उन्हें दीख पड़ी।

गुणसेन ने आने के साथ ही तपस्वी के चरणों में अपना मस्तक नमाया। शिरशूल से उनके अस्वस्थ हो जाने से तपस्वी का सत्कार उसके द्वारा नहीं किया जा सका इस प्रकार बोलते हुए उसने गहरा खेद प्रकट

किया। गुणसेन के खेद अथवा पश्चात्ताप से तपस्वी की महीने की भूख शांत हो जाए ऐसा नहीं था और न दूसरे महीने के उपवास का निश्चय भी डिगने वाला ही था। फिर भी इस खेद और इस पश्चात्ताप ने अन्न के आहार की अपेक्षा भी बहुत गहरी तृप्ति की तपस्वी को प्रेरणा दी। शर्मा को ऐसा विश्वास हुआ कि गुणसेन ने जानबूझ कर कौतुक करने के लिये ही उसको पीछा नहीं लौटा दिया था। विषम संयोग ही इस परिस्थिति के लिये उत्तरदायी हैं और तपस्वी जो ऐसे अचिंत्य उत्पातों का सामना करने का सामर्थ्य नहीं बताए तो फिर इस देहदमन का अर्थ ही क्या?

इकेले अग्निशर्मा को ही नहीं, अपितु समस्त आश्रमवासियों को भी विश्वास हो गया कि शर्मा के उपराउपरि दूसरे महीने के उपवास में गुणसेन निमित्तरूप भले ही हो, परन्तु वस्तुतः इसमें विधाता का ही कुछ संकेत है। गुणसेन का दोष निकालना निरर्थक है।

गलगलित कंठ से गुणसेन आत्मनिवेदन के रूप में कहने लगाः मैं कुछ अस्वस्थ था। मुझे अकस्मात् शिरशूल की कठोर वेदना हो गई थी। वैद्यों ने मुझे आराम करने को कहा, परन्तु आंख मींचते के साथ ही मुझे आपके पारण के दिवस का स्मरण हो आया।

बस तुरत मैंने द्वारपाल को कहला दिया कि कोई महातपस्वी जैसे पुरुष आएं तो उन्हें सम्मानपूर्वक हमारे अन्तःपुर में ले आना। मुझे तुरत ही उत्तर दिया गया कि तपस्वी तो थोड़ी देर हुई कि यहां से लौट हैं।

बस यह सुनते ही मैं अपना शिरशूल भूल या। मेरे अंतर में गहरा धक्का लगा और मैं आपको मार्ग में से ही लौटा लाने को आपके पीछे दौड़ पड़ा। परन्तु मुझे अब ऐसा लगता है कि इसमें भी बहुत देर हो ही गई। पहले भी मैं ने आपके खूब हैरान किया है और इस समय भी ....

गुणसेन क्या कहना चाहता था वह शर्मा सब तुरत ही समझ गये। उनके आवेग का उभार भी अब शांत होने लगा था। अपनी कसौटी हो रही है यह बात अब उनको स्पष्ट ही समझ में आ रही थी।

नहीं राजन्! आपका बिलकुल ही अपराध नहीं है। तपस्वी किसी का भी अपराध नहीं मानते। सत्य बात तो यह है कि तुमने मेरे ऊपर भारी

उपकार किया है। तुमने ही मुझे संसार के कारागार में से छुड़ाया है। तुमने ही मेरे तप की अभिवृद्धि में पूरी पूरी सहायता की है।

अनिष्ट तथा अपकार को भी ये तपस्वी तप की वृद्धि में सहायरूप मानते और मन के आवेगों पर इसी प्रकार की विचारशैली का संयमरूपी अंकुश रखते हैं। इस अंकुश से तपस्वी मात्र के उन्मत्त बने हुए आवेगहस्ति गरीब गाय जैसे कैसे नहीं बना जाएं? कितने ही तो मात्र तपस्वियों के लिये स्वाभाविक ऐसी भाषा ही मुख से बोल जाते होंगे। परन्तु फिर भी अपराधियों पर उसकी गहरी और अच्छा छाप पड़ती है। वैर-विहेष के सांपे लिये तत्काल ही छुप जाते है।

गुणसेन अपने अपराध की गंभीरता समझता था। तपस्वी के क्रोध की भयंकरता भी उसकी गणना के बाहर नहीं थी। परन्तु अग्निशर्मा ने स्वयम् और उसके आचार्य कौडिन्य ने अक्षंतव्य अपराध को तपोवृद्धि का निमित्तरूप जब बता दिया तो उसके हृदय पर का बहुत सा भार हलका हो ही गया।

हलका फूल जैसा बना हुआ उसका हृदय तब कुछ आनन्द की लहर में भी आ गया और वह बोलाः महाराज! इस बेला तो मुझसे सावधान नहीं रहा गया। परन्तु इस महीने के उपवासों के अन्त में यदि आप मेरे यहां पधारे तो मैं अपने को कृतकृत्य मानूंगा।

आहार अथवा उपवास विषयक सब आश्रमवासी स्वतंत्र थे। कौन-कब-किसके यहां से भिक्षा ले आए इस संबंध में खास विधि-निषेध नहीं थे। देह की रक्षा के लिये भिक्षा है ऐसा नहीं परन्तु संयम की रक्षा के लिये आहार आवश्यक है—इसमें जिव्हा की लोलुपता का मिश्रण नहीं किया जाना चाहिये यह सूत्र आचार्य ने सबको सिखा रखा था। इसमें अपवाद न आए बस इस विषय में ही उन्हें जागृत रहना पड़ता था।

फिर भी इस प्रसंग में गुणसेन की ग्लानि और व्याकुलता देख आचार्य ने अग्निशर्मा को दूसरे महीने के अंत में भी गुणसेन के यहां से ही भिक्षा ले आने का अनुरोध किया।

क्रमशः

संकलन—

सधर्मी जैन बंधुओं की सुध कौन लेगा?

भूरचन्द जैन

जैन धर्म में सधर्मी भाई बहनों की सेवा करना पुण्य समझा जाता है। जिसके लिये जैन धर्मावलम्बी कई प्रकार के धार्मिक आयोजन, समारोह, उत्सव, महोत्सव में भागीदार बनकर दिल खोलकर खर्च करते हुए सधर्मी भाई बहनों की खूब सेवा भक्ति करते हैं। ऐसे पुण्य अर्जित करने के लिये जैन धर्म के धर्म प्रचारक, जैनाचार्य, जैन साधु-साध्वियाँ आदि प्रेरणा देते रहते हैं। अक्सर जैन भाग्यशाली जैन सधर्मी भाई बहनों की सेवा उन्हें परोक्ष रूप से ही करते हैं। कहीं-कहीं धार्मिक आयोजनों के अंतर्गत अपनी ख्याति एवं बाहरी दिखावा करने के लिये प्रत्यक्ष रूप से कई प्रकार की वस्तुएं आदि देते रहते हैं। इसे जैन धार्मिक दृष्टिकोई से प्रभावना कह दिया गया है। जो एक प्रकार की भेट है या फिर सम्मान भी कह सकते है। कुछ भी हो सधर्मी जैन भाई-बहनों को सहयोग-सहायता के रूप में तो भाग्यशालियों के हाथों से उतरना मुश्किल है। परन्तु धर्म की ओट में प्रभावना, भेंट देकर कुछ न कुछ देने की इन दिनों दानदाताओं के बीच अपने नाम की वाहवाही के लिये जबरदस्त प्रतिस्पर्धा चालू हो गई है। यह कहां तक ले जावेगी, इसका तो भगवान ही मालिक हैं।

जैन सधर्मी भाईयों की सेवा करने के नाम पर अक्सर दानदाता, आयोजक, भाग्यशाली अपने लिये पुण्य अर्जित करने हेतु तीर्थयात्रा, पैदल संघ यात्रा, तपस्या ओली आराधना, तपस्या के पारणे, एकासणे, बियासणे, उपधान, फागण की फेरी, निनावें यात्रा, चातुर्मास प्रवेश, चातुर्मास दर्शन आने वालों की भक्ति, जीवित महोत्सव भोज, आयंबिल आयोजन, स्वामी वात्सल्य, तपस्या के बाद प्रीतिभोज, प्रतिष्ठा पर स्वामी भक्ति, तपस्या निमित्त भक्ति संगीत का आयोजन आदि कई प्रकार के धार्मिक भाईयों की भक्ति का लाभ लिया जाता है। यह जैन धार्मिक संस्कृति का अच्छा एवं पुण्य अर्जित करने का पहलू अवश्य है। यदि इसके पीछे अपने नाम के

प्रचार-प्रसार की वाहवाही है तो ऐसा करना भी नहीं करने के बराबर है। परन्तु वर्तमान स्थिति में तो केवल अपने नाम की वाहवाही के लिये ही तो भाग्यशाली दानदाता ऐसा प्रतिस्पर्धा के रूप में करते नजर आ रहे हैं। वहां बिना नाम के गोपनीय रूप से भी सधर्मी भाई बहनों की भक्ति भी की जाती है। ऐसे भी उदाहरण जैन समाज में मिलते है। वास्तव में ये पुण्य एवं अच्छा कर्म बांधने के योग्य दानदाता होते हैं।

वर्तमान समय में जैन समाज में सधर्मी भक्ति के धार्मिक आयामों के साथ अन्य आयामों को अपनाना जरूरी हो गया है। क्योंकि समाज में दिनों दिन व्यापारिक प्रतिस्पर्धा एवं अन्य जाति समुदाय द्वारा जैन समाज जो व्यवसाय करता था उसे अपने लिया है। जिसकी वजह से जैन समुदाय के हाथ से व्यापार की कड़ी टूटने लग गई है। कुछ ऐसे व्यवसाय है जिसे जैन धर्मावलम्बी धर्म विरूद्ध समझते है। इस कारण करते नहीं है। मजदूरी का कार्य जैन समुदाय से होता नहीं है। तकनीकी अर्थात् मशीनरी का हुनर आता नहीं है। आरक्षण के कारण नौकरी मिलनी मुश्किल हो गई है। महिलाओं को नौकरी करवाना हीनता समझते है। सेना में भर्ती होने से कतराते है। कई ऐसे व्यवसाय भी है जिसे करने से जैन परम्परा समाजिक, धार्मिक पहलू के कारण नहीं कर पाते है। जिससे जैन परम्परागत व्यवसायी होने के बाद भी इनके साथ से व्यवसाय छूटता जा रहा है जिसके कारण आर्थिक विषमता बढ़ने लगी है। आर्थिक स्थिति दिनों-दिन गिरने लगी है। अर्थाभाव से जैन समाज के कई परिवार ग्रसित है, दुःखी है, परेशान है लेकिन सामाजिक शान के आगे हाथ पसारने की मजबूरी है। बस इस कारण अन्दर की घुटन से जैन परिवार दुखियारा, दर्दभरा जीवन जी रहे है।

व्यवसाय जैन धर्मावलम्बियों का प्रमुख पेशा वं रोटी-रोजी कमाने का साधन रहा है। बस इसे लेकर अपने बाल-बच्चों को पढ़ाने की बजाय साधारण शिक्षित होने के बाद व्यापार के कारोबार में लगा देते है। जो व्यवसाय की नब्ज पकड़ लेते है वे आर्थिक दृष्टि से पीड़ित होकर साधारण नौकरी जिसमें अक्सर मुनिम बनाने को मजबूर हो जाते हैं। अब तो मुनिम के कार्यों में कम्प्यूटर आदि मशीनरी आने से मुनिम की नौकरी मिलनी भी मुश्किल हो रही है। यदि मुनिम को नौकरी मिलती भी है तो जैन मालिक जैन मुनिम को कम से कम वेतन देने का प्रयास करेंगे। भले ही धार्मिक

कार्यों में अपनी प्रसिद्धि के लिये अंधाधुन पैसा पानी की तरह खर्च हो जाय। जैन व्यवसायी यदि उद्यमी है और औद्योगिक ईकाई चलाता है तो उसमें भी जैन भाई-बहनों को कम लगाने की कोशिश में रहता है। इनका मानसिक सोच यह है कि यदि यह ऊंचा उठ गया तो मेरे भाव गिर जायेंगे। यह घटिया व हीन सोच आज सधर्मी भाई बहनों की सेवा में बाधक बना हुआ है।

जैन भाई-बहन आर्थिक स्थिति से कमजोर है और जैन धार्मिक स्थलों, तीर्थों, संस्थाओं, समिति, जैन शिक्षण संस्थाओं आदि में नौकरी करने को यदि मजबूर भी होता है तो व्यवस्था संभालने वाले जैन भाई-बहनों को नौकरी पर रखना पसंद नहीं करते है। यदि अधिक दबाव, सामाजिक, पारिवारिक परिस्थितियां सिफारिश पर अर्थाभाव से कमजोर जैन भाई-बहन को रख भी लेंगे तो उन पर एहसास जताकर कम वेतन देंगे और हीन दृष्टि रखकर उससे आंतरिक ईर्ष्या करते रहेंगे। यह कैसी विडम्बना है। कैसा शौषण है। कैसी सोच है यदि इसे नहीं बदला गया तो आर्थिक दृष्टि से कमजोर जैन भाई-बहनों की सहायता सहयोग के लिये रचनात्मक पहल करनी होगी। तभी हमें सच्चे मायने में जैन भाई-बहनों को आर्थिक सम्पन्नता के लिये एक ईंट एक रूपया देकर उन्हें अपने समकक्ष भी लाया गया। अब तो सक्षम जैन धर्मावलम्बियों को, दानदाताओं को, धार्मिक आयोजकों को धार्मिक आयोजनों पर किये जाने वाले खर्च का कुछ प्रतिशत सधर्मी जैन भाई सहायता कोष गठित कर उसमें संचय करना होगा। धार्मिक कार्यक्रमों में होने वाली आय में से कुछ अंश अलग कर सधर्मी जैन भाई सहायता कोष में जमा करवाने की पहल करनी होगी। अपने यहां यदि संभव हो तो अपने व्यवसाय में जैन बंधुओं को धंधे में लगाना होगा, नौकरी देनी होगी। जैन संस्थाओं आदि में तो जैनों को नौकरी देना आवश्यक कर देना चाहिये।

अर्थाभाव से पीड़ित जैन भाई-बहनों को यदि ऊंचा नहीं उठाएंगे तो उनमें हीन भावना, उन्हें समाज के स्तर के नीचे से नीचे असामाजिक प्रवृत्तियों में मजबूरन लुप्त होना पड़ सकता है। जिसके कारण संपूर्ण जैन

समाज की बदनामी सिर चढ़कर बोलने लगेगी। इन्हें ऐसे भटकने वाली राह पर चलने से बचाने के लिये जैन धर्म के जैन धर्म प्रचारक जैनाचार्यों, जैन साधु-साध्वियों को बीड़ा उठाना वक्त की मांग एवं तकाजा है। जैन धर्मगुरूओं को चाहिये वे अन्य धार्मिक क्रियाकलापों में जैसे धन खर्च करवाने के लिये भाग्यशाली दानदाताओं को प्रेरित कर उनकी आर्थिक गांठ खुलवाते है वैसे ही सधर्मी जैन भाई सहायता कोष स्थापित कर उसमें अधिक सहयोग एवं सहायता देने को प्रेरित करना चाहिये। यदि समय को देखते हुए जैन सधर्मी भाईयों को ऊंचा उठाने के लिये कुछ नहीं किया तो जैन धर्म की उदारता, दानशीलता, परोपकार, सेवा, भक्ति की साख गिरती जावेगी। जिसे समय रहते नहीं संभाला तो अर्थ के मार से दुःखी, परेशान, मजबूर जैन भाई-बहन जैन धार्मिक स्थलों, जैन धार्मिक आयोजनों आदि में बाधक बनकर उनकी निन्दा कर सकते है जो जैन धर्म एवं धर्मावलम्बियों के लिये भविष्य में घातक सिद्ध हो सकते हैं। यदि हम जैन सधर्मी भाई-बहन को ऊंचा उंठाकर कदर, सम्मान, ईज्जत देंगे तो इससे जैन धर्म आदि कि ईज्जत भी बढ़ेगी। बस इस गंभीर समस्या को कारगर बनाने के लिये जैनधर्म के प्रचारक जैनाचार्यों, जैन साधु-साध्वियों, जैन समाज के आगेवानों को पहल करते हुए सभी जगह, सभी स्थानों, सभी धार्मिक क्षेत्रों में जैन सधर्मी सहायता कोष की स्थापना तत्काल करनी चाहिये। जिसके माध्यम से हम जैन सधर्मी भाईयों की सुध आसानी से ले सकते है।

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701 .

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2215-0523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı 'eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO. 9 TITTHAYARA December 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225